राजस्थान की लोक कलाएँ

(मांडणे, रंगोली, अल्पना, गणगौर, मेंहदी)

सृजनशीलता मानव की सहज प्रवृत्ति है। बच्चे में इसे सहजता से देखा जा सकता है। कला के तत्वों एवं सिद्धान्तों से अनजान बच्चे को जैसे ही कोई माध्यम मिलता है वह अपने भावों को अभिव्यक्त करने लगता है। यही अभिव्यक्ति वातावरण मिलने पर आगे चल कर सुघड़ रूप ले लेती है। अपनी इसी कलात्मक अभिरूचि से प्रेरित होकर मनुष्य ने मांडणे, चित्रण या अंकन की कला को विकसित किया है।

मनुष्य ने प्राचीन काल से ही किसी भी धरातल पर इकरंगी या विभिन्न रंगों से चित्रों या आकृतियों को बनाना सीख लिया था। जिसके चिन्ह हमें प्राचीन सभ्यताओं के उत्खनन से प्राप्त होते हैं। प्रागैतिहासिक काल की गुफाओं से लेकर मोहनजोदाड़ों व हड़प्पा संस्कृति की खुदाई से प्राप्त बर्तनों मुद्राओं आदि पर भी किसी न किसी रूप में इस अंकन कला के चिन्ह हम पाते रहें है। भारतवर्ष में मांडणों की प्रथा प्राचीन काल से ही लोकप्रिय रही है। मांडणों से तात्पर्य सभी प्रकार के मांडणे (अलंकृत परिकल्पनाओं) जैसे आँगन, दीवार एवं हाथों तथा पैरों (मेंहदी द्वारा) इत्यादि के मांडणों से है। यह धार्मिक, सांस्कृतिक आस्थाओं का प्रतीक भी रही है। इन्हें आध्यात्मिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। वैदिक काल में हवनों एवं यज्ञों में 'वेदी' का निर्माण करते समय भी मांडणे आदि बनाये जाते थे। ग्रामीण अंचलों में घर–आँगन साफ कर लीपने के बाद रंगोली, अल्पना, मांडणों आदि का रिवाज आज भी विद्यमान है।

त्यौहारों, व्रत, अनुष्ठान, पूजा, उत्सव, विवाह तथा पुत्र जन्म आदि के अवसर पर मांडणे, रंगोली, अल्पना आदि बनाने की परम्परा हमारे देश में सर्वत्र प्रचलित है। कला के विकास में धार्मिक तथा जातिगत परम्पराओं का बहुत योग होता है। इसीलिए भारत जैसे विशाल देश में विभिन्न प्रान्तों के अपने अलग–अलग रहन–सहन, रीतिरिवाज तथा मान्यताएँ हैं उन्हीं के अनुरूप अलग–अलग जगहों पर शादी–विवाह, उत्सव–त्यौहार तथा मांगलिक कार्यों पर घर आंगन को लीप–पोत कर सुन्दर–सुन्दर रंगों से सजाया जाता है व दीवारों तथा घर–द्वारों की सज्जा की जाती है।

अंकन की यह कला भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा लोक कला है। लोक कला यानि

जन–जन द्वारा जन–जन हेतु निसृत कला। भारत में लोक का यह रूप अलग–अलग प्रदेशों में यह अलग–अलग नामों से प्रचलित है। इनकी शैली में भिन्नता हो सकती है लेकिन इसके पीछे निहित भावना और संस्कृति में पर्याप्त समानता है। उत्तर प्रदेश में इसे चौक पूरना, राजस्थान में मांडणा, बिहार में अरिपन, बंगाल में अल्पना, महाराष्ट्र में रंगोली, कर्नाटक में रंगवल्ली, तमिलनाडू में कोल्लम, उत्तरांचल में ऐपण, आंध्र प्रदेश में मुग्गु, हिमाचल प्रदेश में अदुपना, कुमाऊँ में लिखथाप या थापा तो केरल में कोलम कहा जाता है।

रंगोली–अल्पना–मांडणे

भारत में प्राचीन काल से ही मांडणों, रंगोली या चौक पूरने की परम्परा रही है। इसमें लोक कला एक अविरल धारा के रूप में माँ से बेटी को, सास से बहु को परंपरा से मिलती रही है। छोटी लडकियाँ पड़ौस व घर की देखादेखी अल्पनाएँ, रंगोली, मांडणे आदि बनाना सीखती हैं और शादी के बाद दूसरी जगह जाने पर इनके माध्यम से दूसरे प्रदेश में कला प्रसारित करती है। इसी से एक राज्य के आलेखन (डिजाइन) दूसरे राज्य में भी मिल जाते हैं। आलेखनों की दृष्टि से बंगाल, राजस्थान व गुजरात विशेष समृद्ध हैं।

अल्पना जीवन दर्शन का प्रतीक है जिसमें यह जानते हुए भी कि यह कल धुल जायेगी, नश्वरता को जानते हुए भी पूरे जोश के साथ की जाती है। कहा जाता है कि रंगोली का जन्म एक बिन्दू से हुआ है। यह बिन्दू आत्मा व परमात्मा का मिलन बिन्दु है। यह आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक है। आलेखन सामान्यतः केन्द्र बिन्दू के अंकन के बाद चतुरभुज के चार बिन्दुओं से प्रारम्भ की जाती है। इन्हें अन्दर से बनाना शुरू करके बाहर फैलाते जाते हैं। यह चार बिन्दू चार वेद चार दिशाएँ चार आश्रम आदि की प्रतीक हैं। कुछ मांडणे ऐसे बनाये जाते हैं जिन पर पाँव न रखना पड़े। इसी तरह घर की देहरी प्रवेश द्वारा चौक व पूजा स्थल के मांडणों में भी कुछ बातों का ध्यान रखा जाता है।

सबसे अधिक मांडणे, रंगोली आदि दीपावली पर्व पर बनाये जाते हैं। उस समय घर की सफाई पुताई होती है। फर्श की सफाई धुलाई होती है। कच्चे फर्श को गोबर मिट्टी से लीपा जाता है तथा लक्ष्मी के स्वागत की तैयारी होती है। अतः इस अवसर पर फर्श व दीवारों को खुबसूरत मांडणों, रंगोली आदि से सजाने की परंपरा चली आ रही है। राजस्थान में हीण, हटड़ी, दीवट दीपावली के मौके पर ही मांडणे बनाये जाते हैं। बड़ा पगल्या गृह प्रवेश स्थान पर, छोटा पगल्या प्रवेश स्थान व लक्ष्मी पूजन स्थान पर बनाया जाता है। बड़े पगल्ये के पास गाय के खुर बनाने का प्रचलन है। (चित्र सं. 1,2, 3, 4)

दीपावली के अलावा दशहरा, रक्षाबंधन, भाई दूज, होली, संक्रांति, तीज, गणगौर आदि पर मांडणा और रंगोली, अल्पना आदि बनाई जाती है। नव–वधु के स्वागत में रंगोली बनाने की परंपरा है और उससे कहा जाता है कि अलंकृत भूमि पर ही पाँव धरे। किसी भी उत्सव व विशिष्ट आगंतुक के स्वागत समारोह में भी प्रवेश द्वार को मांडनों से सजाते हैं। यदि इन्हें काफी समय तक सुरक्षित रखना हो तो इन्हें तेल रंगों से बनाते हैं।

रंगोली–अल्पना–मांडणे बनाने की विधियाँ

रंगोली, अल्पना, मांडने बनाने की प्रक्रिया स्थान–स्थान पर भिन्न–भिन्न है। कच्चे घरों में त्यौहारों पर स्त्रियाँ मिट्टी व गोबर मिलाकर लीपती हैं। गोबर में लाल मिट्टी भी मिलाते हैं जिससे फर्श या दीवारों का रंग लाल व गेरूआ हो जाता है। कहीं–कहीं राख गोबर मिलाकर एक और रंग का संयोजन किया जाता है। पक्के फर्श पर बनाने के लिए कई तरीके काम में लाये जाते हैं।

तैयार फर्श या दीवार पर खड़ी–खड़िया से मांडणे बनाये जाते हैं। खड़ी–खड़िया को भिगो कर पतला घोल कपड़े से छान कर थोड़ा सा गोंद भी डालते हैं। सफेद रंग के लिए पांडु सफेद कली (चूना), आटा व पिसा चावल का उपयोग किया जाता है। चावलों को भिगो कर, फूल जाने पर सिल पर मैदा के समान बारीक पीस लेते हैं। थोड़ा पानी मिला कर गाढ़ा घोल बना देते हैं। इसमें कई तरह के रंग भी मिलाये जा सकते हैं। मिट्टी के फर्श पर मांडणा करना हो तो रंग नहीं मिलाते। रंगों के अलावा मूंग, उड़द, चावल, गेहूँ आदि से भी अल्पना का सजाते हैं।

बंगाल में चावलों को कूट पीस कर उसका लेप तैयार करके तथा रंग भरने के लिए उसमें रंग मिला कर कपड़े की एक बत्ती की सहायता से महिलाएँ अल्पना बनाती हैं। इनकी आकृतियों में मुख्य हैं, मछली, सूर्य, रीछ, चन्द्र, लक्ष्मी के चरण तथा पत्तियाँ और लताएँ। अच्छी फसल के लिए महिलाऐं आँगन में पेड़ की आकृति बना कर भी उसकी पूजा करती हैं।

महाराष्ट्र और गुजरात में रेखाओं के लिए बिल्लौर पाउडर तथा अन्दर के भराव के लिए रंगीन पाउडर को काम में लिया जाता है। फिर सूखने पर सीधी रेखाओं में बिंदियाँ जोड़ कर डिजाइन पूरा किया जाता है और फिर इसे रूपहला पाउडर छिड़क कर चमकदार बना दिया जाता है। गुजरात में इन रंगों के माध्यम से पौराणिक दृश्य, स्वस्तिक तथा कुछ ज्यामितीय नमूने व महापुरूषों की आकृतियाँ भी अंकित की जाती है।

अल्पना

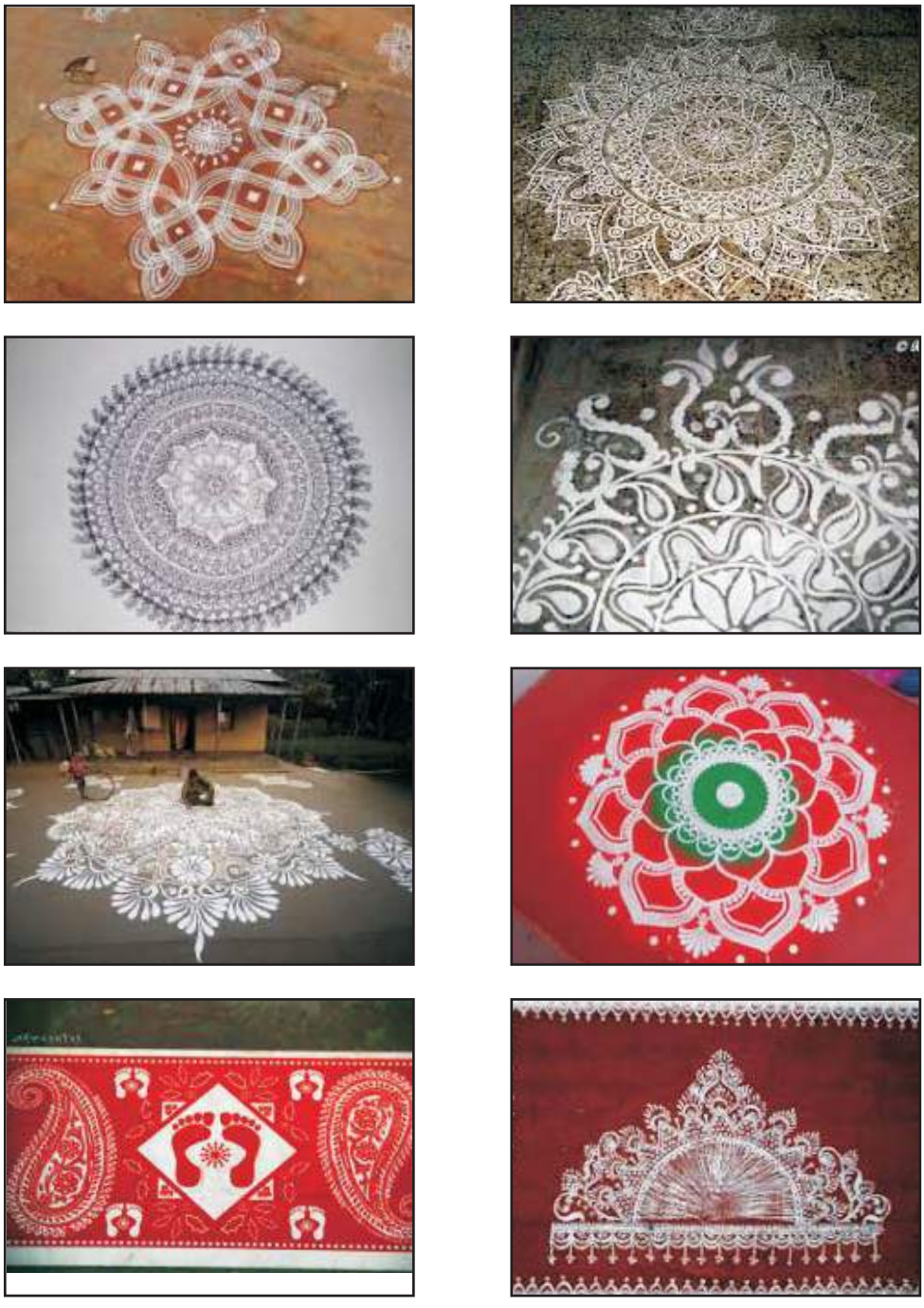

चित्र सं. 3

रंगोली

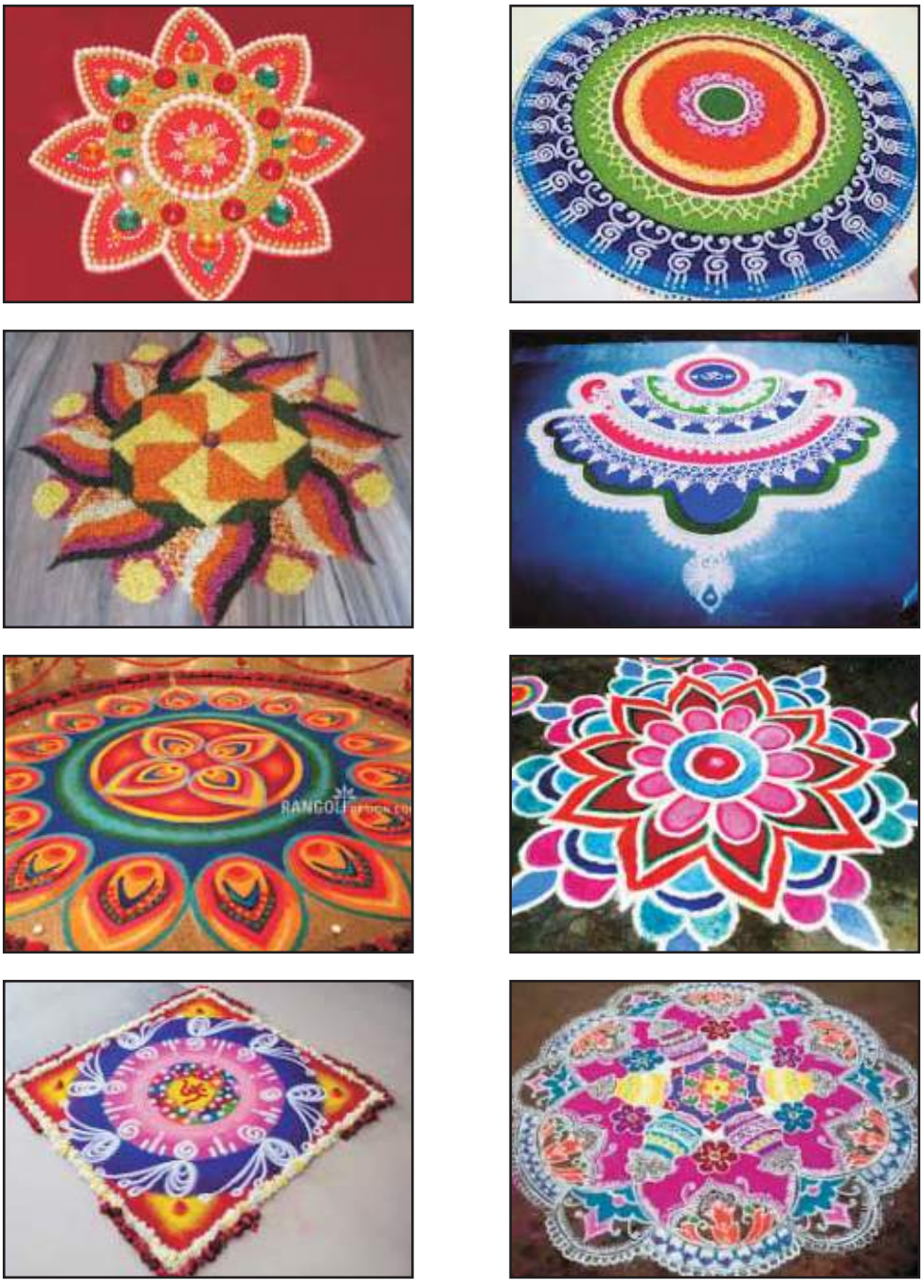

चित्र सं. 4

मांडणे :

राजस्थान में अधिकांश मांडणों के लिए सफेद खड़िया, हिरमच या गेरू का प्रयोग किया जाता है। सर्वप्रथम खड़िया को पानी में घोला जाता है। फिर कपड़े के छोटे टुकड़े को घोल में भिगो कर हाथ में रख कर छोटी उँगली के पास वाली उँगली से भूमि पर मांडणे बनाये जाते हैं। इसमें किसी भी प्रकार के यन्त्र का रेखाओं व वृत्त इत्यादि के खींचने के लिये प्रयोग नहीं किया जाता। मांडणों को हमेशा केन्द्र से शुरू करके बाहर की ओर बढ़ाया जाता है। इनकी अपनी बँधी हुई इकाइयाँ हैं। जिनके आधार पर उन्हें कम ज्यादा बढ़ाकर बनाया जाता है, जिनको ये लोग चीरण, जूआ, झँवरा, बेल, भरती और फुलड़ी कहते हैं। (चित्र सं. 1, 2) कहीं–कहीं अपनी इच्छा से महिलाएँ इनमें लाल, हरा, नीला, पीला या सिन्दूरी रंग भी भर देती हैं। भूमि अलंकरण की इस परंपरा में राजस्थानी मांडणों का अपना विशिष्ट स्थान है। यहाँ के लोग मांडणे प्रायः सफेद तथा भरने में लाल या पीले रंग से ही भरे जाते हैं। कहीं–कहीं यह मांडणे आटे, हल्दी व कुमकुम से भी बनाये जाते हैं, तो कहीं–कहीं विभिन्न रंगों से रंगी चौकर व खड़िया से बनाये जाते हैं। पहले इनकी खास–खास रेखाएँ खींच ली जाती हैं। फिर उसे त्रिभुज या गोलों में बाँट कर पूरा किया जाता है। यहाँ श्रावण मास के त्यौहारों पर पाँच फूल, सात फूल, चौपड़, फूलझड़ी तथा दीवार पर बनाया जाने वाला मांडणा होता है। मकर संक्रांति पर सूरज का रथ तथा फीण्यां मांडी जाती हैं। होली पर खांडा, चंग, ढोलक आदि तथा गणगौर आदि पर गुणा मांडा जाता है। शादी–ब्याह, दीपावली व नव आगंतुक के आने के उपलक्ष्य में चौक पूरना, रथ, बैलगाड़ी, गलीचे तथा पगल्या मुख्य रूप से मांडे जाते हैं। इसी तरह दशहरा देवप्रबोधिनी एकादशी पर भी आंगन में कुछ–कुछ प्रतीकात्मक स्वरूपों को अंकित करके उनकी पूजा की जाती है।

बहुत से त्यौहारों पर देवी–देवताओं के प्रतिकात्मक स्वरूपों को दीवार पर अंकित करके भी उनकी पूजा की जाती है। यह दीवारों के मांडणे अलंकरण की दृष्टि से भी बनाये जाते हैं तो पूजा अनुष्ठान के लि भी। जैसे राजस्थान में श्रावण पूर्णिमा पर दरवाजे के दोनों ओर की दीवारों पर श्रवण कुमार की मातृ–पितृ भक्ति के कुछ प्रतीकात्मक चित्र बनाकर उनकी पूजा की जाती है। सांझी पूजन की भी एक परम्परा हमारे समाज में है। इसे किसी मंदिर या देवरे की दीवार पर गोबर से बनाया जाता है। उंगली या अंगुठों के बीच गोबर लेकर उसे दीवार पर चिपकाकर कई तरह की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। फिर उन्हें कुमकुम आदि से दीवार पर देवी–देवताओं के प्रतीकात्मक स्वरूपों तथा स्वास्तिक आदि के चित्र बनाये जाते हैं। जहाँ तक अलंकरण का प्रश्न है वहाँ तो हम विविध रूपों के पक्के रंगों यहाँ तक की सुनहरी व रूपहरी रेखाओं तक में प्राचीन इमारतों की

दीवारों तथा खिड़की दरवाजों पर बने भित्ति–चित्रों का देखते ही हैं।

मांडणे के प्रतीक चिन्ह

रंगोली में ज्यामितिक आकारों का बहुत प्रयोग किया जाता है। बिन्दु, रेखा के साथ–साथ त्रिभुज, वृत्त व बहुभुज आदि का प्रयोग होता है। इन्हें बनाने में किसी यन्त्र सामग्री की सहायता न लेकर स्वतन्त्रता से अंदाज से बनाया जाता है। आकारों की अनगढ़ता व रेखाओं के मोटे पतले होने का भी अपना एक सौंदर्य होता है।

बिन्दुओं से बनने वाले मांडणों में तांत्रिक विचारों की झलक मिलती है। इन बिन्दुओं की निश्चित संख्या व आलेखनों में होने के कारण इनसे गिनती भी सिखाई जाती है। 3 गुना 3 बिन्दुओं से लेकर 108 गुना 108 बिन्दुओं तक की आलेखनें मिल जाती हैं। अधिक बिन्दुओं की डिजाइनें कठिन होने के कारण अधिक प्रचलित नहीं हो सकी हैं।

दीपावली के मांडने और उनके अर्थ

दीपावली के दिन स्त्रियाँ घर का आँगन पक्का हो तो उसे धोकर या कच्चा हो तो उसे लीपकर उस पर खड़िया व गेरू से मांगलिक चौक पूरती हैं, लक्ष्मीजी के पगल्या (पाँव) बनाती हैं। फिर गेरू व खड़िया से ही दीवाल पर एक चौखटा बनाकर उसमें लक्ष्मी–गणेश के चित्र मांडती हैं। फिर चित्र बनाया जाता है– लक्ष्मी के आसन कमल का, दोनों ओर मेघों के प्रतीक स्वरूप दो सजीव हाथियों के चित्र अंकित किये जाते हैं। यहीं पर एक ओर प्रकृति की आदि शक्ति स्तोत्र दिन व राज के प्रकाश स्तम्भ सूर्य व चन्द्रमा के चित्र भी अंकित किये जाते हैं।

होली के मांडने व अर्थ

होली के अवसर पर राजस्थान में बनाए जाने वाले मांडणे :– चंग, पगल्या, दरी, चौक, थाली, बाजोट, बीजणी, गाडूला, चटाई हैं। चौक के चारों ओर डांडिये, गेंद, दड़ी, सातिया तथा चाँद–सूरज बनाए जाते हैं। ये चित्र बच्चों के खेल व होली के बाद आने वाली गर्मी के प्रतीक है। बीजणी होली थाली बाजोट सुख शान्ति व समृद्धि के प्रतीक हैं तथा पगल्या देवी–देवताओं व लक्ष्मी की उपस्थिति के प्रतीक हैं। प्रतिकात्मक रूप में कुछ पेड़–पत्तियाँ व पक्षियों आदि के चित्र भी अंकित किए जाते हैं।

गणगौरः

गणगौर पूजन प्रतिपदा (धुलण्डी) चैत्र से कुंवारी कन्याऐं शुरू करती हैं। कन्याऐं छत या किसी

मांडणे

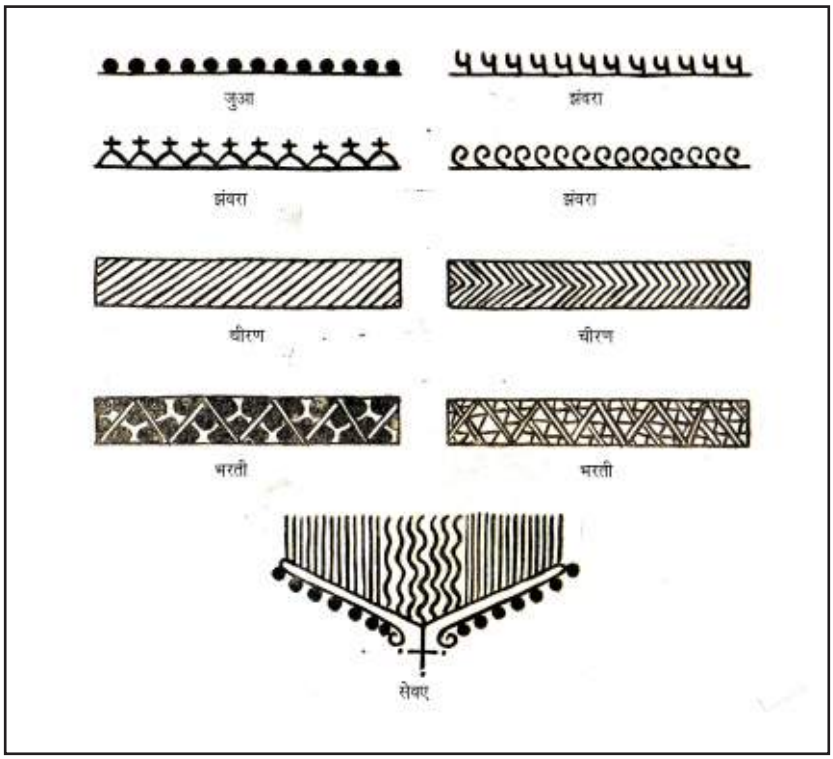

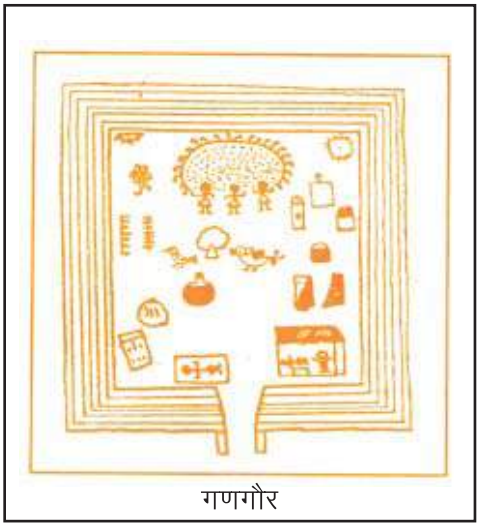
गणगौर

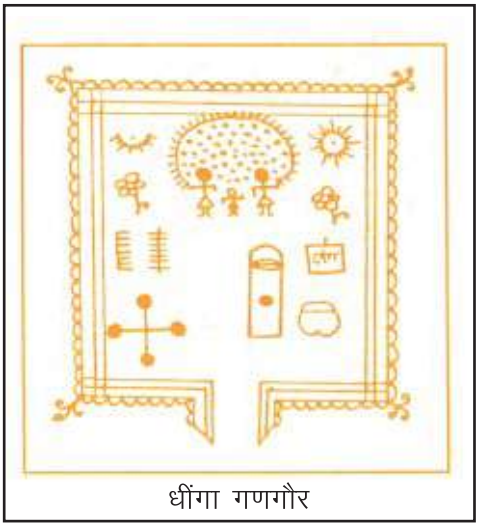
धींगा गणगौर

चित्र सं. 1

मांडणे

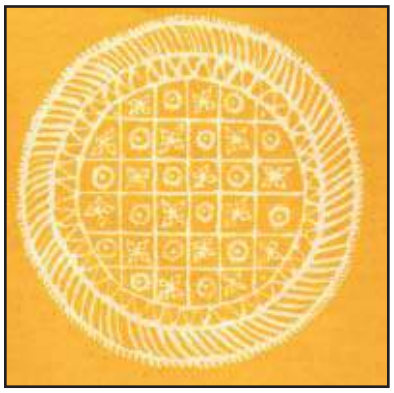

फूल़

गलीचा

चौपड़

पांच फूल

पगल्या

गाड़ी

चित्र सं. 21

एकांत स्थान पर गोबर से फर्श को लीप कर सफेद मिट्टी से चित्र बनाती हैं। सप्तमी तक रोज एक नई आलेखन कभी पान कभी फूल या पत्ती में गणगौर, ईसर व उनके बालक का स्वरूप बनाकर पूजती हैं। शीतलाष्टमी से आठ दिन तक यही स्वरूप दोपहर बाद किसी देव–स्थान की दीवार पर जाकर गुलाल के सात रंगों से बनाकर पूजती हैं जिसे स्थानीय बोली में दान्तणिया (गणगौर को पानी पिलाना) कहते है। चित्र सं. 1

धींगा गणगौरः

चैत्र शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से धींगा गणगौर का विवाहित स्त्रियाँ पूजन करती है। किसी खुली आलमारी या पवित्र स्थान की दीवार को सफेद मिट्टी से पोतकर इस पर केसर कुमकुम से चित्र बनाया जाता है, जिसकी पन्द्रह दिन तक लगातार विधिवत गेंहू, पतासे, रोली, चावल, धूप, घी, पुष्प आदि से पूजा की जाती है। चित्र सं. 1

मेंहदी

यह स्त्रियों के सोलह शृंगारों में से एक शृंगार है। राजस्थान में मेंहदी का प्रचलन ज्यादा है। मेंहदी एक बारहमासी पौधा है। इसकी पत्तियों का प्रयोग शृंगार के साधन के रूप में होता है। इसकी पत्तियों को छाया में सुखाकर, पीस कर, पानी मिला कर लेही तैयार की जाती है। इस लेही से हाथ, पैर नाखून और बालों को रंगा जाता है। लेही में किसी तूलीका या माचीस की तूली को डूबोकर या आधुनिक काल में कोन में भर कर स्त्रियाँ हाथ व पैरों तलुओं पर इसके द्वारा सुन्दर आलेखन बनाया करती हैं। लगाते समय यह हरे रंग की होती है लेकिन सूख जाने पर रच कर इसका रंग लाल हो जाता है।

विशेष रूप से स्त्रियाँ व कुमारियाँ मेंहदी लगाती हैं। हिन्दुओं में तीज, श्रावणी, दिवाली, होली, गणगौर आदि त्यौहारों पर और विवाहादि मांगलिक कार्यों पर मेंहदी लगाई जाती है। गणगौर के पर्व स्त्रियाँ हाथों में चूनड़ी और गुणा के मांडणें विशेष रूप से मांडा करती हैं। तीज के त्यौहारों पर मांडे जाने वाले प्रमुख मांडणे लहरिया और घेवर है। दिवाली के पर्व पर स्त्रियाँ मेंहदी के मांडणों में हाथ पर पान और गलीचा मांडा करती हैं। होली के पर्व पर स्त्रियाँ मेंहदी के माध्यम से अपनी हथेलियों पर चौपड़ एवं चार बीजड़ी एवं अन्य प्रकार के मांडणे मांडा करती हैं। इसके अलावा अन्य त्यौहारों, पर्वों तथा मांगलिक कार्यों पर स्त्रियाँ अपनी इच्छानुकूल फूल, पांच पचेटा, साट्या का झाड़, फुलड़ियाँ आदि जो उन्हें पसंद होते हैं, मांड लेती हैं। चित्र सं. 5

मेंहदी, स्त्रियों के शृंगार की वस्तु होने तथा उनकी कोमल हथेलियों की सुन्दरता को निखार देने के

मेहन्दी

चित्र सं. 5

कारण उनकी प्रिय वस्तु बन गई है। अब धीरे–धीरे मेंहद के मांडणों में कई नये आलेखनों का समावेश होने लग गया है।

महत्वपूर्ण बिन्दुः

1. लोक कला यानि जन–जन द्वारा जन–जन हेतु निसृत कला।
2. मांडणे को विभिन्न प्रदेशों में मांडणा कला अलग–अलग नामों से प्रचलित है। उत्तर प्रदेश में इसे चौक पूरना, राजस्थान में मांडणा, बिहार में अरिपन, बंगाल में अल्पना, महारा ट्र में रंगोली, कर्नाटक में रंगवल्ली, तमिलनाडू में कोल्लम, उत्तरांचल में ऐपण, आंध्र प्रदेश में मुग्गु, हिमाचल प्रदेश में अदुपना, कुमाऊँ में लिखथाप या थापा तो केरल में कोलम कहा जाता है।
3. गणगौर पूजन प्रतिपदा (धुलण्डी) चैत्र से कुंवारी कन्याऐं शुरू करती हैं।
4. तीज के त्यौहारों पर मांडे जाने वाले प्रमुख मांडणे लहरिया और घेवर है। दिवाली के पर्व पर स्त्रियाँ मेंहदी के मांडणों में हाथ पर पान और गलीचा मांडा करती हैं। होली के पर्व पर स्त्रियाँ मेंहदी के माध्यम से अपनी हथेलियों पर चौपड़ एवं चार बीजड़ी एवं अन्य प्रकार के मांडणे मांडा करती हैं।
5. होली के अवसर पर राजस्थान में बनाऐ जाने वाले मांडणे – चंग, पगल्या, दरी, चौक, थाली, बाजोट, बीजणी, गाडूला, चटाई हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न

1. मांडणा किस प्रदेश की लोक कला है?

(अ) तामिलनाडू (ब) बिहार

(स) महाराष्ट्र (द) राजस्थान

2. अल्पना किस प्रदेश की लोक कला है?

(अ) महाराष्ट्र (ब) बंगाल

(स) बिहार (द) तामिलनाडू

3. बिहार की लोक कला है–

(अ) अल्पना (ब) अरिपन

(स) मांडणा (द) रंगोली

4. आन्ध्र प्रदेश की लोक कला है–

(अ) मांडणा मांडणा (ब) मुग्गू

(स) कोलम (द) कोल्लम

5. तीज के त्यौहार पर कौन सी मेंहदी मांडी जाती है –

(अ) पांच पचेटा (ब) फुलड़िया

(स) लहरिया और घेवर (द) साट्या का झाडू

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. होली के अवसर पर बनाये जाने वाले मांडणों के नाम बताइये।
2. दिवाली के अवसर पर बनाये जाने वाले मांडणों के नाम बताइये।
3. मेंहदी किस से बनाई जाती है?
4. गणगौर किस अवसर पर बनाई जाती है?
5. मेंहदी विशेष रूप से कौन लगाती हैं?
6. गणगौर पूजन कौन करती हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मेंहदी लगाने की विधि बताईये।
2. रंगोली बनाने की विधि बताईये।
3. मांडणे बनाने की विधि बताईये।
4. होली के मांडणे के अर्थ बताइये।
5. अल्पना बनाने की विधि बताइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. मेंहदी कला बारे में विस्तार से लिखिये।
2. विभिन्न त्यौहारों पर बनाये जाने वाले मांडणों के बारे में विस्तार से लिखिये।

उत्तरमाला बहुचयनात्मक प्रश्न

1. द 2. ब 3. ब 4. ब 5. स